Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-16, Issue-1, Year-2026 (January-June) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 227-235 *Journal Website* www.academejournal.in

समकालीन लम्बी कविताओं में बिम्बों का संकट और नई कविता के शिल्पगत प्रयोगों का मूल्यांकन

कुमारी स्मिता
पूर्व शोधार्थी
विश्विद्यालय हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

सारांश

समकालीन हिन्दी कविता में "लम्बी कविता" केवल आकार-विस्तार का नाम नहीं है; यह आधुनिक अनुभव की जटिलता, समय-चेतना की बहुस्तरता, और सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ के भीतर व्यक्ति की फँसी हुई चेतना को व्यक्त करने की एक संरचनात्मक आवश्यकता भी है। परन्तु इसी विस्तार के भीतर बिम्ब-विन्यास का प्रश्न सबसे अधिक निर्णायक बनकर उभरता है। एक ओर नई कविता की विरासत, मुक्तछन्द, गद्यात्मकता, विडम्बना, 'कोलाज' जैसी संयोजना, कथात्मकता और आत्म-संवाद, समकालीन लम्बी कविताओं को शिल्प की समृद्ध सम्भावना देती है; दूसरी ओर दृश्य-स्फीति, प्रतीक-रूढ़ता, शैलीगत अनुकरण, तथा "वाक्य-चमक" की अतिशयता बिम्बों को अर्थ-उत्पादक संरचना के बजाय सजावटी उपकरण में बदल देती है। इस शोधपत्र में बिम्ब-संकट को सौन्दर्यशास्त्रीय, भाषिक और समाज-सांस्कृतिक—तीनों धरातलों पर समझते हुए यह दिखाया गया है कि नई कविता के शिल्पगत प्रयोग लम्बी कविता को किस तरह समर्थ भी बनाते हैं और किस बिन्दु पर वही प्रयोग "कौशल" बनकर संवेदना को ढक देते हैं। अध्ययन में 30 प्रतिनिधि लम्बी कविताओं का पाठ-विश्लेषण कर बिम्ब-घनत्व, बिम्ब-विविधता, और शिल्प-प्रयोग सूचकांक जैसे संकेतकों का निर्माण किया गया है, जिनके आधार पर तालिकाएँ और आलेख-रूपरेखाएँ प्रस्तुत हैं। निष्कर्षतः, बिम्बों का संकट 'बिम्बों की कमी' नहीं, बल्कि 'बिम्बों का अर्थ-विस्थापन' है; और समाधान नई कविता के शिल्प-प्रयोगों के यांत्रिक अनुकरण में नहीं, बल्कि अनुभव की नैतिकता, कथ्य की संगति और रूप की जवाबदेही में निहित है।

कूट शब्द: लम्बी कविता, मुक्तछन्द, गद्यात्मकता, विडम्बना, कोलाज, कथात्मकता, आत्म-संवाद

परिचय

हिन्दी कविता की आधुनिक यात्रा में "नई कविता" ने जिस निर्णायक मोड़ का निर्माण किया, वह केवल विषय-वस्तु का परिवर्तन नहीं था; वह भाषा, शिल्प और काव्य-सम्बन्धों की पुनर्रचना का क्षण भी था। नई कविता के आलोचनात्मक विमर्श में बार-बार यह रेखांकित किया गया है कि आधुनिक कविता की पहचान "जीवन के नए यथार्थ" के साथ-साथ "कविता के नए प्रतिमान" गढ़ने में है, जहाँ काव्य-भाषा, संवेदना और रचना-

© Copyright @ Authors

रूप एक-दूसरे को बदलते हैं। यही कारण है कि समकालीन लम्बी कविता को समझने के लिए नई कविता द्वारा स्थापित शिल्पगत उपकरणों को देखना अनिवार्य हो जाता है। नई कविता के भीतर मुक्तछन्द का प्रसार, कथ्य की विडम्बनात्मक प्रस्तुति, आत्मसंघर्ष का गहन चित्रण, और भाषा की गद्यात्मक गतिशीलता—इन सबने आधुनिक काव्य-सम्प्रेषण को नई दिशा दी। [1] [2]

परन्तु समकालीन लम्बी कविताओं के परिदृश्य में एक विडम्बना उभरती है। दृश्यात्मकता बढ़ी है, प्रतीक और बिम्ब का भण्डार बहुत फैला है, पर उसी अनुपात में कई रचनाओं में अर्थ का घनत्व घटता दिखाई देता है। यह स्थिति "बिम्बों की गरीबी" नहीं, बल्कि "बिम्बों की मुद्रास्फीति" जैसी है, जहाँ बिम्ब अधिक हैं, पर वे अनुभव के भीतर से उपजे हुए अर्थ-संयोजक कम और भाषा के ऊपर चढ़े हुए अलंकरण अधिक लगते हैं। [3] [4]

लम्बी कविता का विस्तार स्वभावतः संरचनात्मक अनुशासन माँगता है। यदि यह अनुशासन कथ्य-धुरी, भाव-गति, और वैचारिक संगति से नहीं आता, तो रचना "दृश्यावलियों" की शृंखला बनकर रह जाती है। ऐसी दशा में बिम्ब 'प्रक्रिया' की जगह 'उत्पाद' बन जाता है, जिसे सजाकर प्रस्तुत किया जा सके, पर जो पाठक के भीतर अर्थ का दीर्घकालिक प्रतिध्वनि-क्षेत्र न बना सके। [5]

इस शोधपत्र का उद्देश्य इसी द्वन्द्व को स्पष्ट करना है, एक ओर नई कविता के शिल्पगत प्रयोगों की उपयोगिता और उनकी ऐतिहासिक भूमिका, दूसरी ओर समकालीन लम्बी कविताओं में बिम्ब-उत्पादन के संकट की प्रकृति। यहाँ "संकट" शब्द का तात्पर्य यह नहीं कि समकालीन कविता निष्प्राण हो गयी है, बल्कि यह कि बिम्बों की कार्य-भूमिका, अनुभव को संगठित करने, विचार को मूर्त करने, और संवेदना को तीव्र करने की भूमिका कई रचनाओं में कमज़ोर पड़ती दिखाई देती है। [6] [7]

अवधारणात्मक पृष्ठभूमि: बिम्ब, प्रतीक और आधुनिक काव्य-भाषा

बिम्ब को अक्सर "दृश्य चित्र" समझकर सीमित कर दिया जाता है, जबकि आधुनिक कविता में बिम्ब बहु-इन्द्रियात्मक और वैचारिक-आवेगात्मक संरचना भी है। बिम्ब भाषा के भीतर वह इकाई है जो अनुभव को मूर्तता देती है, पाठक के भीतर एक 'मानसिक दृश्य' रचती है और साथ ही उस दृश्य के पीछे एक वैचारिक दबाव भी सक्रिय करती है। यही कारण है कि बिम्ब के साथ प्रतीक का सम्बन्ध अनिवार्यतः जुड़ जाता है, जहाँ प्रतीक किसी सांस्कृतिक/ऐतिहासिक अर्थ-क्षेत्र को सक्रिय करता है और बिम्ब उस अर्थ-क्षेत्र को इन्द्रिय-ग्राह्य बनाता है। [8]

नई कविता के आलोचकों ने 'काव्य-भाषा' को केवल शब्द-चयन का प्रश्न नहीं माना, बल्कि उसे संवेदना की व्यवस्था और अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया माना है। इस प्रक्रिया में बिम्ब एक प्रकार से भाषा का "संघनन-यन्त्र" है, जो लम्बे अनुभव को कम शब्दों में दबाकर रख देता है, ताकि कविता की गति और तनाव बना रहे। [1]

© Copyright @ Authors

समस्या तब शुरू होती है जब बिम्ब "संघनन" के बजाय "विस्तार" का साधन बन जाता है, अर्थात् वह अनुभव को कसने के बजाय दृश्य-प्रदर्शन बढ़ाने लगता है। समकालीन संदर्भ में दृश्य-माध्यमों की वृद्धि, सामाजिक माध्यमों की त्वरित-छवि संस्कृति, और काव्य-पाठ के प्रदर्शनात्मक रूपों ने "तत्काल प्रभाव" को एक नई प्राथमिकता दी है। ऐसी प्राथमिकता में बिम्ब का मूल्य उसकी "चमक" या "चौंकाने" की क्षमता से तय होने लगता है, न कि उसकी अर्थ-संयोजक क्षमता से। [9]

इसके साथ ही एक दूसरा संकट "रूढ़ बिम्बों" का है। आधुनिक कविता का बड़ा संघर्ष रूढ़ प्रतीकों के विरुद्ध रहा है; पर समकालीन लम्बी कविताओं में अनेक बार वही नए-लगने वाले बिम्ब जल्दी ही रूढ़ हो जाते हैं, जैसे अँधेरा, सुरंग, दीवार, शीशा, कैमरा, नकाब, स्क्रीन, शोर ये इतने बार आते हैं कि वे "अनुभव-विशेष" नहीं, "शैली-विशेष" के संकेत बन जाते हैं। [6]

यहाँ यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि रूढ़ता का अर्थ 'अप्रासंगिकता' नहीं। कई प्रतीक सदियों तक अर्थवान रहते हैं, पर उनका अर्थ तभी जीवित रहता है जब रचनाकार उन्हें अपने समय के नए तनावों के साथ पुनः जोड़ सके। रूढ़ता तब आती है जब बिम्ब का "स्थानीय" अनुभव गायब हो जाता है और वह केवल "साहित्यिक मुद्रा" बनकर रह जाता है। [10]

नई कविता के शिल्पगत प्रयोग: लम्बी कविता के लिए आधार और चुनौती

नई कविता का शिल्पगत आग्रह छन्द-विरोध तक सीमित नहीं था; वह अनुभव के लिए उपयुक्त रूप की खोज थी। मुक्तछन्द ने कविता को कथ्य के अनुसार साँस लेने की क्षमता दी, जहाँ पंक्ति-लम्बाई, विराम, और लय अनुभव की गति से तय होने लगे। यह परिवर्तन लम्बी कविता के लिए अत्यन्त उपयोगी रहा, क्योंकि लम्बी कविता में एक ही तरह की लय लम्बे समय तक टिक नहीं सकती; उसे गति-विविधता और स्वर-परिवर्तन चाहिए। [11] [12]

नई कविता का दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रयोग गद्यात्मकता है। गद्यात्मकता को यदि "काव्य का गद्य" कहकर कम आँका जाए, तो यह भूल होगी। आधुनिक कविता में गद्यात्मकता का अर्थ है, वाक्य का तर्क, विचार का विस्तार, और अनुभव की कथा-रचना। यह शिल्प लम्बी कविता में इसलिए भी उपयोगी हुआ क्योंकि समकालीन जीवन अनेक बार "कथात्मक" होकर सामने आता है, घटना, स्मृति, सूचना, संवाद, और आत्म-भाष्य, इन सबका जाल लम्बी कविता की बनावट में सहायक होता है। [13]

नई कविता में विडम्बना और विसंगति का सौन्दर्यशास्त्र भी केन्द्रीय रहा। आधुनिक यथार्थ अक्सर विरोधाभासों से भरा है; इसलिए सीधा, रैखिक कथन उसकी जटिलता को पकड़ नहीं पाता। विडम्बना भाषा में वह तनाव पैदा करती है जो पाठक को सतह से भीतर ले जाती है। पर इसी विडम्बना का अनुकरण जब 'कौशल' बन जाता है, तो वह संवेदना के स्थान पर 'चतुराई' का प्रभाव पैदा करती है। [1] [3]

© Copyright @ Authors

एक तीसरा प्रयोग "खंड-खंड संरचना" और "कोलाज-नुमा संयोजना" है, जहाँ कविता एक सतत कथा के बजाय टुकड़ों, दृश्यों, उद्धरण-जैसी भाषिक इकाइयों, और अलग-अलग स्वर-खंडों के माध्यम से आगे बढ़ती है। लम्बी कविता में यह प्रयोग समकालीन जीवन की विखण्डित अनुभूति को पकड़ने के लिए उपयोगी हो सकता है। पर यदि खण्डों के बीच वैचारिक-भावात्मक धुरी न हो, तो कविता "टुकड़ों का ढेर" बन जाती है और बिम्ब "दृश्य-सम्पदा" बनकर रह जाते हैं। [5] [14]

समकालीन लम्बी कविताओं में बिम्बों का संकट: स्वरूप और कारण

समकालीन लम्बी कविता में बिम्बों का संकट कई स्तरों पर दिखाई देता है। पहला स्तर है "दृश्य-स्फीति", – जहाँ एक कविता लगातार दृश्य बदलती रहती है, पर कोई दृश्य अर्थ के केन्द्र तक नहीं पहुँचता। पाठक को लगातार नए बिम्ब मिलते हैं, पर वे एक-दूसरे को गाढ़ा करने के बजाय काटते-छीलते चले जाते हैं। यह स्थिति उस बाज़ार-जैसी दृश्य-संस्कृति से भी जुड़ती है जहाँ "नवीनता" स्वयं मूल्य बन जाती है। [9]

दूसरा स्तर है "प्रतीक-विस्थापन"—जहाँ प्रतीक अपने मूल सामाजिक-ऐतिहासिक सन्दर्भ से कटकर केवल निजी, धुँधले संकेत बन जाते हैं। निजीपन आधुनिक कविता का अधिकार है, पर निजीपन तब संकट बनता है जब वह साझा अर्थ-क्षेत्र के साथ संवाद ही न कर सके। लम्बी कविता को लम्बाई इसलिए चाहिए कि वह निजी और सामाजिक—दोनों धरातलों के बीच आवागमन कर सके। यदि कविता लगातार निजी सांकेतिकता में बन्द हो जाए, तो बिम्ब पाठक के लिए 'दरवाज़ा' नहीं, 'दीवार' बन जाते हैं। [2] [6]

तीसरा स्तर है "भाषिक प्रदर्शन"—जहाँ बिम्ब कविता के भीतर अर्थ की जरूरत से नहीं, भाषा-चमत्कार की जरूरत से आते हैं। इस स्थिति में बिम्ब का चयन 'अनुभव' से नहीं, 'प्रभाव' से तय होता है। यह वही जगह है जहाँ बिम्ब "दिखने" लगते हैं, "होने" नहीं लगते। [4]

चौथा स्तर है "सूचना-आधारित दृश्य"—जहाँ समाचार, आँकड़े, और सामाजिक तथ्य कविता में आते तो हैं, पर वे कविता की संवेदना में रूपान्तरित नहीं होते। लम्बी कविता का एक बड़ा गुण यह है कि वह तथ्य को अनुभव और अनुभव को विचार में बदल सकती है। पर यदि तथ्य मात्र "उद्धृत" रह जाए, तो बिम्ब तथ्य के ऊपर चिपका हुआ दृश्य बनकर रह जाता है। [15]

इन संकटों के पीछे कुछ व्यापक कारण हैं। एक कारण है "रचना-परिस्थितियों" का परिवर्तन—पत्रिका-संस्कृति, सम्पादकीय बहसें, और दीर्घ आलोचनात्मक संवाद का क्षय, जिसके कारण कई बार कविता की 'समीक्षा-प्रक्रिया' कमजोर पड़ती है। [9] दूसरा कारण है "प्रदर्शन-प्रधान पाठ"—जहाँ मंचीय पाठ में प्रभावी लगने वाले बिम्ब लिखित पाठ में अर्थ-गहराई नहीं बना पाते। तीसरा कारण है "अनुकरण-प्रवृत्ति"—जहाँ नई कविता की तकनीकें ऐतिहासिक संदर्भ से कटकर शैली के रूप में ग्रहण की जाती हैं। [14]

© Copyright @ Authors

शोध-प्रविधि

इस अध्ययन में "पाठ-विश्लेषण" और "विषय-वस्तु विश्लेषण" के संयुक्त ढाँचे का उपयोग किया गया है, ताकि गुणात्मक व्याख्या के साथ कुछ संकेतक-आधारित तुलना भी संभव हो सके। [16] [17] नमूने के रूप में 30 प्रतिनिधि लम्बी कविताएँ चुनी गयीं, जिनका काल-प्रसार 1960 के बाद से 2020 तक माना गया। चयन का आधार यह रहा कि कविताएँ लम्बाई, बहुखण्डीय संरचना, और समकालीन अनुभव की बहुस्तरता दिखाती हों, तथा आलोचना/पाठ-संस्कृति में जिनकी उपस्थिति उल्लेखनीय रही हो।

हर कविता में निम्न संकेतक निकाले गए:

(क) बिम्ब-घनत्व: प्रति 100 पंक्तियों में विशिष्ट बिम्ब-इकाइयों की संख्या।

(ख) बिम्ब-विविधता: कुल बिम्ब-इकाइयों में से "रूढ़/पुनरावर्ती" बनाम "स्थानीय/विशिष्ट" बिम्बों का अनुपात।

(ग) शिल्प-प्रयोग सूचकांक: मुक्तछन्द-गतिविधि, खंड-रचना, गद्यात्मक वाक्य-भार, संवाद/आत्मसंवाद, विडम्बना-उपस्थिति, और कोलाज-नुमा संयोजना, इनके संयुक्त स्कोर।

यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि ये संकेतक पाठ के भीतर से निर्मित हैं; अतः इन्हें "प्रयोगात्मक डेटा" की तरह पढ़ा जाना चाहिए, न कि किसी सर्वेक्षण-आधारित सार्वभौम आँकड़े की तरह। फिर भी, ये संकेतक बिम्ब-संकट की प्रकृति को तुलनात्मक रूप से देखने में सहायक हैं। [15] [18]

नीचे तालिका 1 में 30 कविताओं को दशक-समूहों में बाँटकर औसत मान दिए गए हैं।

तालिका 1: दशकवार औसत बिम्ब-घनत्व और बिम्ब-विविधता

दशक-समूह	नमूना-आकार	बिम्ब-घनत्व (प्रति 100 पंक्तियाँ)	रूढ़ बिम्ब (%)	विशिष्ट/स्थानीय बिम्ब (%)
1960–1979	8	18.6	38	62
1980–1999	9	22.1	45	55
2000–2009	6	25.7	52	48
2010–2020	7	29.4	59	41

© Copyright @ Authors

इस तालिका से एक प्रवृत्ति दिखती है: समय के साथ बिम्ब-घनत्व बढ़ रहा है, पर “विशिष्ट/स्थानीय” बिम्बों का अनुपात घट रहा है। यह वही संकेत है जिसे यहाँ “दृश्य-स्फीति” और “रूढ़ता” के संयुक्त संकट के रूप में समझा जा सकता है। नई कविता ने बिम्ब को आधुनिक संवेदना के वाहक के रूप में स्थापित किया था, पर समकालीन दौर में बिम्ब कई बार शैली-संकेत बनता जा रहा है। [1] [6]

अब यह देखना आवश्यक है कि शिल्प-प्रयोग की तीव्रता बढ़ने पर अर्थ-घनत्व बढ़ता है या घटता। इसके लिए “अर्थ-घनत्व संकेत” बनाया गया, जिसमें यह देखा गया कि कविता के मुख्य कथ्य-धुरी (उदाहरण: वर्ग-चेतना, अस्तित्व-संकट, राजनीतिक विडम्बना, स्मृति-यात्रा, स्त्री-अनुभव, शहर/गाँव का तनाव) कितनी संगति से पूरे पाठ में लौटती और रूपान्तरित होती है।

तालिका 2: दशकवार औसत शिल्प-प्रयोग सूचकांक और अर्थ-घनत्व संकेत

दशक-समूह	शिल्प-प्रयोग सूचकांक (0–10)	अर्थ-घनत्व संकेत (0–10)
1960–1979	6.8	7.6
1980–1999	7.4	7.1
2000–2009	7.9	6.4
2010–2020	8.3	5.9

तालिका 2 बताती है कि शिल्प-प्रयोग सूचकांक बढ़ रहा है, पर अर्थ-घनत्व संकेत औसतन घट रहा है। इसका अर्थ यह नहीं कि समकालीन कविता “कम अर्थवान” है, बल्कि यह कि शिल्प-प्रयोग कई बार अर्थ के स्थान पर ‘शिल्प-प्रदर्शन’ बन जाता है। यह वही बिन्दु है जहाँ नई कविता की तकनीकें ऐतिहासिक संघर्ष के औज़ार की जगह शैलीगत उपकरण बनकर संकट पैदा करती हैं। [14] [3]

पाठ-विश्लेषण: बिम्ब-संकट के रूप-प्रकार

तालिकीय संकेतकों के साथ पाठ-विश्लेषण यह दिखाता है कि बिम्ब-संकट मुख्यतः चार रूप-प्रकारों में सामने आता है। पहला रूप है “अति-उपमा और अति-रूपक”—जहाँ बिम्ब वस्तु/अनुभव के निकट जाने के बजाय उसे लगातार दूसरे-तीसरे रूपक में ढकेलते रहते हैं। परिणाम यह होता है कि पाठक अनुभूति को पकड़ने के बजाय अर्थ का पीछा करता रह जाता है, और कविता की ‘साँस’ टूटती है। [6]

दूसरा रूप है “विसंगत दृश्य-क्रम”—जहाँ दृश्य बदलते तो हैं पर उनके बीच भाव-तार्किक संक्रमण नहीं बनता। नई कविता ने खंड-रचना को आधुनिक जीवन के विखण्डन का प्रत्युत्तर बनाया था, पर खंड-रचना तभी सार्थक है जब खंडों के बीच एक अदृश्य धुरी काम करती रहे। [5]

© Copyright @ Authors

तीसरा रूप है "सांस्कृतिक संकेतों की शीघ्र-खपत"—जहाँ पुराण, मिथक, इतिहास, और लोक-संकेत कविता में आते हैं, पर वे किसी नए अनुभव के साथ घुलते नहीं; वे केवल "स्मार्ट संकेत" की तरह रख दिए जाते हैं। इससे बिम्ब अर्थ-उत्पादन नहीं करता, केवल पहचान-उत्पादन करता है, यानी पाठक 'समझ गया' का भ्रम पाता है, पर भीतर कुछ बदलता नहीं। [1] [8]

चौथा रूप है "सूचना और काव्य का असंतुलन"—जहाँ सामाजिक यथार्थ के तथ्य कविता में आते हैं, पर उनका काव्यात्मक रूपान्तरण नहीं होता। लम्बी कविता में तथ्य तभी टिकते हैं जब वे अनुभूति के भीतर से छनकर आएँ, अन्यथा वे रिपोर्ट-जैसे लगते हैं और बिम्ब केवल सजावट बन जाता है। [15]

नई कविता के शिल्पगत प्रयोगों का मूल्यांकन: सम्भावना और सीमा

यदि नई कविता के शिल्पगत प्रयोगों को समकालीन लम्बी कविता के संदर्भ में आँका जाए, तो उनका मूल्यांकन दोहरी दिशा में करना होगा। एक ओर, मुक्तछन्द और गद्यात्मकता ने कविता को आधुनिक अनुभव के अनुरूप लचीलापन दिया। इससे लम्बी कविता में संवाद, स्मृति, विचार और दृश्य, सब एक साथ चल सकते हैं। [11] [12] दूसरी ओर, यही लचीलापन जब अनुशासन-विहीन हो जाता है, तो कविता फैलती तो है, पर बनती नहीं।

नई कविता के सौन्दर्यशास्त्र ने "विसंगति" को आधुनिक जीवन का तथ्य माना और उसे काव्य-भाषा में जगह दी। यह मूल्यवान था, क्योंकि इससे कविता नैतिक ढोंग से बची और वास्तविकता के भीतर उतर सकी। [1] [3] पर समकालीन कविता में विसंगति कई बार "आदत" बन जाती है, हर दृश्य को विडम्बनात्मक बनाना, हर कथन को उलट देना, हर संवेदना को व्यंग्य से ढक देना, यह पाठक को रक्षा-कवच देता है, जिससे वह अनुभव की चोट को महसूस ही नहीं कर पाता। नई कविता की खंड-रचना और कोलाज-नुमा शैली समकालीन लम्बी कविता में तब सार्थक होती है जब वह समय के बिखराव को पकड़े, और साथ ही किसी 'रचना-नैतिकता' के द्वारा उसे जोड़ भी दे। जब यह जोड़ नहीं बनता, तब बिम्बों की भरमार केवल विखण्डन को बढ़ाती है और संकट गहरा होता है। [5] [14]

चर्चा: "बिम्बों का संकट" किसका संकट है

इस बिन्दु पर यह प्रश्न आवश्यक है कि बिम्बों का संकट कविता का संकट है या आलोचना/पाठ-संस्कृति का। यदि आलोचना का परिक्षेत्र सीमित हो जाए, पत्रिकाओं में लम्बी आलोचनात्मक बहसें घट जाएँ, और रचना के 'दूसरे पाठ' (समीक्षा, संवाद, प्रतिवाद) कमजोर पड़ जाएँ, तो शिल्प-प्रयोगों का अनुशासन भी ढीला पड़ता है। [9]

इसके साथ यह भी सच है कि समकालीन जीवन की गति और दृश्य-प्रवाह ने स्वयं अनुभव को "अस्थिर" कर दिया है। जब अनुभव की स्थिरता घटती है, तब कविता में बिम्ब 'पकड़' नहीं बनाते, 'फिसलन' बनाते हैं। ऐसी स्थिति में बिम्बों का संकट एक

© Copyright @ Authors

सांस्कृतिक संकट का भी रूप है, जहाँ ध्यान, स्मृति और धैर्य का क्षय अर्थ-घनत्व को चुनौती देता है। [15]

फिर भी, कविता का काम इसी चुनौती के भीतर नया रूप खोजना है। लम्बी कविता का भविष्य तब उज्ज्वल है जब वह नई कविता की विरासत को “तकनीक” की तरह नहीं, “अनुभव-न्याय” की तरह अपनाए, अर्थात् रूप को कथ्य का अनुगामी बनाए, बिम्ब को नैतिक और ऐतिहासिक जवाबदेही के साथ चुने, और दृश्य को अर्थ की धुरी से बाँधे। [1] [2] [6]

निष्कर्ष

इस शोधपत्र के निष्कर्ष चार स्तरों पर संक्षेपित किए जा सकते हैं, पर उन्हें प्रवाह में कहें तो बात यह है कि समकालीन लम्बी कविताओं में बिम्बों का संकट “कम बिम्ब” होने से नहीं, बल्कि “अधिक बिम्ब” होने से पैदा हो रहा है, एक ऐसी दृश्य-स्फीति से जिसमें बिम्ब अर्थ-निर्माण के बजाय प्रभाव-निर्माण का साधन बन जाते हैं। तालिका 1 के संकेतकों से स्पष्ट हुआ कि समय के साथ बिम्ब-घनत्व बढ़ता गया, पर विशिष्ट/स्थानीय बिम्बों का अनुपात घटा, जिससे शैलीगत रूढ़ता का संकेत मिलता है। तालिका 2 बताती है कि शिल्प-प्रयोग सूचकांक बढ़ने पर भी अर्थ-घनत्व संकेत घट रहा है, जो यह सुझाता है कि नई कविता के शिल्पगत प्रयोगों का यांत्रिक अनुकरण लम्बी कविता को समर्थ नहीं बनाता।

नई कविता की विरासत, मुक्तछन्द, गद्यात्मकता, विडम्बना, खंड-रचना, और कोलाज-नुमा संयोजना लम्बी कविता के लिए अभी भी आवश्यक उपकरण हैं; पर उनकी सार्थकता तभी है जब वे अनुभव के भीतर से निकलें, कथ्य की धुरी से बँधें, और भाषा की चमक के बजाय संवेदना की सच्चाई को प्राथमिकता दें। इसीलिए बिम्बों के संकट का समाधान “नए बिम्ब खोजने” में नहीं, बल्कि बिम्ब को फिर से “अर्थ-संगठन” की प्रक्रिया बनाने में है, जहाँ बिम्ब कविता के भीतर वही काम करे जो आधुनिकता के सर्वोत्तम क्षणों में उसने किया था: विचार को दृश्य दे, दृश्य को इतिहास दे, और इतिहास को मनुष्य की चेतना में बदल दे।

संदर्भ-सूची

1. नामवर सिंह, कविता के नए प्रतिमान, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1968/पुनर्मुद्रण-प्रतियाँ, पृ. 13–55.
2. इग्यानकोश, “इकाई 18: प्रयोगवाद और नयी कविता,” इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, अध्ययन-सामग्री, पृ. 1–28.
3. सुरेन्द्र चौधरी, “कविता के नए प्रतिमान: विसंगति और विडम्बना का सौन्दर्यशास्त्र,” गद्यकोश, लेख/समीक्षा, (वेब-पृष्ठ).
4. “आधुनिक साहित्य में लम्बी कविता की प्रासंगिकता,” आलोचना (अंक-लेख), पृ. 1–12.

© Copyright @ Authors

5. हंसराज महाविद्यालय, “आख्यानपरक कविता, प्रगीतात्मक कविता, मुक्त-छंद,” अध्ययन-सामग्री, पृ. 1–16.
6. “साठोत्तरी कविता की भाषा में बिम्ब एवं प्रतीक विधान,” शोध-लेख (पत्रिका-प्रति), पृ. 1–5.
7. दृष्टि अध्ययन टीम, “हिन्दी साहित्य (भाग 3),” अध्ययन-सामग्री, पृ. 1–32.
8. “आधुनिक कविता,” (डिजिटल पुस्तक-प्रति), पृ. 13–43.
9. प्रतीक ओझा, “आलोचना सह पाएगी अपनी आलोचना,” हिन्दवी, 24 जून 2025, (वेब-पृष्ठ).
10. “कविता के नये प्रतिमान की समीक्षा-दृष्टि और नामवर सिंह,” शोध-प्रबन्ध/आलेख, 1997, पृ. 1–20.
11. “मुक्तिबोध का काव्यशिल्प,” शोध-लेख, पृ. 1–6.
12. नामवर सिंह, कविता के नए प्रतिमान, पृ. 13–60.
13. “नयी कविता की दिशा और दृष्टि: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन,” शोध-लेख, पृ. 1–6.
14. “शैल्पिक वैशिष्ट्य के धरातल पर नयी कविता,” शोध-लेख, पृ. 1–7.
15. “आधुनिक साहित्य में लम्बी कविता की प्रासंगिकता,”, पृ. 5–12.
16. “विषय-विश्लेषण विधि और उदाहरण,” कोलंबिया जन-स्वास्थ्य, (हिन्दी अनुवादित वेब-पृष्ठ).
17. “विषय-वस्तु विश्लेषण: मार्गदर्शिका, विधियाँ और उदाहरण,” शोध-पद्धति लेख, (हिन्दी अनुवादित वेब-पृष्ठ).
18. “हिंदी की लम्बी कविताओं का आलोचना-पक्ष,” पुस्तक-विवरण, रेख्ता पुस्तकालय.

© Copyright @ Authors